MR. CHAIRMAN: This is exactly what I wanted you to say.

श्री शरद यादव : सर, पूरी बहस होनी चाहिये ।

REFERENCE TO THE HARDSHIPS OF FISHERMEN DUE TO HEAVY SAND AT THE KASIMOD FISHING HARBOUR

PROF. B. RAMACHANDRA RAO (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I wish to bring to your notice that the Kasimode Fishing Harbour in the Madras Port has been silted, and it has blocked the passage. I know the Government has already been showing great concern about providing facilities to the traditional fishermen and the mechanised-boat owners.

I would like to draw the attention of this House through you to the Shipping Minister that he should take special care to see that the entrance to the Fishing Harbour is continuously monitored and that no obstruction is caused to the fishing activity. I would also like to mention that if this had happened in the main port, we would have incurred colossal losses. This particular blocking of the Fishing Harbour has caused considerable hardship to the fishermen and the mechanised-boat owners. I would like to suggest that a scientific study should be conducted and no further recurrence of such blockage of the Fishing Harbour be allowed to occur in future.

(Mr. Deputy Chairman in the Chair).

REFERENCE TO THE REPORTED DANGER TO UDAIPUR REGION DUE TO OBNOXIOUS ODOUR AROUND PESTICIDE PLANT

श्री धूलेश्वर मीणा (राजस्थान) : श्रीमन् उपसभापति महोदय, मैं इस स्पेशल मेंशन के द्वारा आपकी मार्फत सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं जो इस अखबार में छपा है —

"Pesticide and Zinc Smelter Unity may turn Udaipur into mini Bhopal."

श्रीमन् इस न्यूज से उदयपुर के आसपास की जनता में एक भय फैला हुआ है । यह स्टेट इंस्टीट्यूशन आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ने एक सर्वे किया और उन्होंने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि उदयपुर के पास में जिंक स्मेलटर यूनिट और पेस्टीसाइड इंडिया लिमिटेड है जो शहर के हार्ट में है और उससे निकलने वाला धुंआं जो है वह पांच-छह किलोमीटर के एरिए के लोगों को प्रभावित करता है । इससे लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है । आप देखिए ; जब उदयपुर के अंदर ट्रेन में बैठे पैसेंजर आते हैं तो ट्रेन में बैठे इन लोगों का सांस लेना मुश्किल हो जाता है इतनी भारी बदबू उस पेस्टीसाइड से आती है । तो मेरा निवेदन है कि इस संबंध में वहां की जनता ने सरकार का ध्यान आकर्षित किया लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया । इस अखबार में एक बात यह लिखी है—

"The people constantly brought it to the notice of the Government several times, but the authorities are perhaps waiting for some major accident".

"The State administration has turned a blind eye to it."

श्रीमन् इस प्रकार की घटना पहले हम भोपाल में देख चुके हैं । उदयपुर में भी उसी प्रकार की कोई घटना न हो ; उसके लिए मैं आपकी मार्फत सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि इस ओर शीघ्र कदम उठाए जाएं । वैसे इस संबंध में कई एक लोगों ने पहले लिखा है कि यह जो सिटी में सिटी के

आसपास यूनिट हैं या तो इनको शहर से दूर लगाया जाये साथ ही साथ इस सम्बन्ध में जो लोग दोषी पाए जायें उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये, इसलिए मैं इसकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

REFERENCE TO THE NEED TO CELEBRATE THE 125TH BIRTH ANNIVERSARY OF PANDIT MADAN MOHAN MALAVIYA

श्री सत्यप्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर विशेष उल्लेख के माध्यम से आपने इस विषय को उठाने की अनुमति दी इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। मुझे इस बात को उठाने की इच्छा नहीं थी, लेकिन मुझे लगा मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं करूंगा यदि मैं इसकी ओर सदन का ध्यान आकर्षित न करूं। महान मदन-मोहन मालवीय का जन्म प्रयाग में एक अत्यन्त निर्धन परिवार में 25 दिसंबर, 1861 को हुआ था। आगामी 25 दिसम्बर से उनकी 125वीं जन्मतिथि का शुभारंभ हो रहा हैं। उन्होंने राष्ट्र की अविस्मरणीय सेवाएं की थीं। वे आजादी की लड़ाई के महान योद्धा, महान देशभक्त तथा शिक्षाविद पत्रकार थे। वे इंडियन नेशनल कांग्रेस के संस्थापकों में से थे और चार बार उस कांग्रेस के वे अध्यक्ष थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वे संस्थापक थे। ओल्ड इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा केन्द्रीय धारासभा के वे सदस्य थे। देश का कामकाज देश की भाषा में हो इस बात के प्रवर्तक थे। इस आशय का तार उन्होंने सितम्बर, 46 में जब अन्तरिम सरकार बनी तब रुग्ण शैय्या से भारत के प्रधान मंत्री को भेजा था। उन्होंने लिखा था "—अपने देश में अपना राज हो।"

मान्यवर, इसी सदन में 23 जुलाई, 1986 को तारांकित प्रश्न संख्या 100 के उत्तर में सरकार ने बताया है प्रश्न था—क्या सरकार महामना मदन मोहन मालवीय की 125वीं जयन्ती राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का विचार रखती है। उत्तर मिला— सरकार के पास ऐसा कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

मैं सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने महामना मालवीय जी के बारे में क्या लिखा था—

> "मैं तो मालवीय जी महाराज का पुजारी हूं। पुजारी कैसे स्तुति के वचन लिख सके? जो कुछ लिखेगा अपूर्ण सा प्रतीत होगा।... आज मालवीय जी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है... यौवन काल से आज तक उनकी देश-भक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न चलता आया है... वह नरवीर हमारे लिए दीर्घायु हो।"

गे उन्होंने लिखा—

> "जब मैं अपने देश में कर्म करने के लिए आया तो पहले लोकमान्य तिलक के पास गया। वे मुझे हिमालय से ऊंचे लगे। मैंने सोचा हिमालय पर चढ़ना मेरे लिए संभव नहीं और मैं लौट आया। फिर मैं गोखले के पास गया। मुझे वे सागर के समान लगे। मैंने देखा कि मेरे लिए इतनी गहराई में पैठना संभव नहीं और लौट आया। अन्त में, मैं महामना मालवीय के पास गया। मुझे वे गंगा की धारा के समान निर्मल लगे। मैंने देखा, इस पवित्र धारा में स्नान करना मेरे लिए संभव है।"

26 नवम्बर, 1920 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के बाहर विद्यार्थियों की सभा में महात्मा गांधी ने कहा था—

> "मालवीय जी से बड़ा धर्मात्मा मैंने नहीं देखा। जीवित व्यक्तियों में मुझे उनसे ज्यादा भारत की सेवा करने वाला कोई भी दिखाई नहीं